नहीं किया। वस्तुतः यदि अन्तर्मुख होकर मनन किया जाए तो रामावतार का मुख्य प्रयोजन दुष्कृतियों का विनाश ही तो था। सो उसके क्रियात्मक द्वार का उद्घाटन करने का श्रेयः एक मात्र माननीया मंथरा को ही है।

कदाचित् बाल लीला से लेकर विवाह पर्यन्त ही रामायण होती तो इसमें क्या स्वारस्य होता? राम भगवान् का चरित्र तो वन गमन से आगे की लीलाओं द्वारा ही वास्तव में चमका है, जिसकी सूत्रधार एक मात्र राजकुमारी रेखा है।

श्रीकौशिक रामायण सार

रामचरित विस्तार प्रसंग

श्रीसूत उवाच

गाधीपुरस्य निकटे जाह्नव्या दक्षिणे तटे।
क्षेत्रं बकसरो नाम नानावृक्षोपशोभितम्।।१।।

श्रीसूत जी कहते हैं - गाधीपुर के निकट गंगा के दक्षिण तट के पास 'बकसर' नाम का क्षेत्र है जो नाना वृक्षों से सुशोभित है।

लता-गुल्म-निकुंजाढ्यं सर्वर्तुसुखसंयुतम्।
वन्यपुष्पसमाकीर्णं कन्दमूलफलाधिकम्।।२।।

वह लता और गुल्म तथा निकुञ्जों से युक्त, सब ऋतुवों में सुखप्रद, वन्य पुष्पों से सुगन्धित एवं कन्दमूल फलों से समृद्ध था।

तत्र गाधीसुतः श्रीमान् कौशिको मुनिसत्तमः।
निर्माय स्वाश्रमं दिव्यमुवास तपसि स्थितः।।३।।

वहां महाराजा गाधी के पुत्र श्रीमान् कौशिक नामक मुनीश्वर अपना दिव्य आश्रम बना कर तप करते हुए निवास करते थे।

स्वाध्यायनिरतास्तस्य शिष्या अयुतसंख्यकाः।
तत्रैव निवसन्तिस्म ब्रह्मचर्य्यव्रते स्थिताः।।४।।

उनके वेदशास्त्र पढ़ने वाले दश सहस्त्र शिष्य थे, जो ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुवे वहां निवास करते थे।

ऋषेः कुलपतेस्तस्य प्रियः पुत्रत्वमागतः।
शिष्येष्वन्यतमो वर्णी देवरात इति स्मृतः।।५।।

उन कुलपति महर्षि कौशिक का प्रिय पुत्र रूप में स्वीकृत एक देवरात नाम का ब्रह्मचारी शिष्य था।

एकदा कौशिकः श्रीमान् सभ्यगृहुतहुताशनः।
आस्थितः शिष्य सदसि पाठयामास सुव्रतः।।६।।
देवरातस्तदा वाक्यं प्रोवाच वदतांवरः।

एक बार सुव्रत श्रीमान् कौशिक मुनि भलीप्रकार अग्निहोत्र आदि नित्यकृत्य से निवृत्त होकर शिष्यगणों में बैठे हुए उन्हें पढ़ा रहे थे। तब वक्ताओं में उत्तम देवरात शिष्य ने पूछा।

देवरात उवाच

गुरुदेव नमस्तुभ्यमन्वर्थस्त्वं पिता मम।
श्रीरामचन्द्रचरितं ज्ञातुमिच्छामि तत्त्वतः।।७।।

देवरात बोले – हे गुरुदेव मैं आप को नमस्कार करता हूं, आप वस्तुतः मेरे अन्वर्थ पिता (रक्षक) हो, मैं रामचन्द्र जी का पूर्ण चरित्र जानना चाहता हूं।

त्वत्समस्तस्य तत्त्वज्ञो नान्यः कश्चिद् भुवस्तले।
यतो हि नाटकस्यास्य सूत्रधारो भवान् मतः।।८।।

भूमण्डल में उस चरित्र के तत्त्व का ज्ञाता आपके समान अन्य कोई नहीं है, क्योंकि इस नाटक के सूत्रधार निश्चित रूप से आप ही माने जाते हैं।

श्रूयते मुनयस्त्वां हि ज्ञात्वा नीतिविदांवरम्।
रक्षः कुलविनाशाय नियुञ्जन्तिस्म सादरम्।।९।।

सुना है कि मुनिजनों ने आप को ही राजनीति का विशेषज्ञ समझ कर राक्षसों के विनाश के लिए सादर नियुक्त किया था।

त्वया हि याचितो राजा श्रीमान् दशरथः स्वयम्।
बला चातिबलाशक्तिर्दिव्यास्त्राणि बहूनि च।।१०।।
सरहस्यं प्रदायैतौ शिक्षितौ रामलक्ष्मणौ।
यच्च शैव्यं धनुर्वीरा नासन् द्रष्टुमपि क्षमाः।।११।।
तदेव भग्नं रामेणाऽतिबलाशक्तिविद्यया।
पूर्वं ये पार्थिवा आसन् दृप्ताः स्वातन्त्र्यसस्पृहाः।।१२।।
ज्ञात्वा तेऽतिबलं रामं बभूवुर्हतविक्रमाः।
संभूय ते यदा मूर्खाः सीतां हर्तुं समुद्यताः।।१३।।
पूर्वं हि त्वन्नियुक्तः स जामदग्न्यः समागतः।
भीता नृपतयः सर्वे निर्भयो लक्ष्मणोऽवदत्।।१४।।

आपने ही श्रीमान् राजा दशरथ से स्वयं राम लक्ष्मण मांगे थे, आपने ही बला अतिबला शक्तियें और नानाविध दिव्य शस्त्रास्त्र रहस्य सहित प्रदान करके राम और लक्ष्मण को प्रशिक्षित किया था। जिस शिव धनुष को अन्यान्य वीर स्पर्श भी न कर सके थे उसको अतिबला शक्ति के द्वारा राम ने ही तोड़ डाला था। पहले जो घमण्डी सामन्त अपनी-अपनी स्वतन्त्रता का दम भरने वाले थे, वे सब धनुर्भङ्ग के कारण राम भगवान् को अति बलवान् मान कर पराभूत हो गए थे। फिर जब वे मूर्ख इकट्ठे होकर सीता जी का अपहरण करने को उद्यत

हुए तो आप द्वारा पहिले से ही नियुक्त श्री जामदग्न्य परशुराम आ पहुंचे। सब राजा भयभीत हो गए, परन्तु लक्ष्मण जी निर्भय होकर वादानुवाद करते रहे।

अन्ते भृगुपतिर्नत्वा दत्वा चापं वनङ्गतः।
अनेन तव नाट्येन सुप्रयुक्तेन सक्रमम्।।१५।।
युद्धं बिना जिताः सर्वे गृहयुद्धे रता नृपाः।
यदा दशरथोऽकाण्डे ह्यैच्छद् रामाभिषेचनम्।।१६।।
तन्निरोधाय भवता शिक्षिता मन्थरा यदा।
यदि रामो नृपो भूत्वा युद्ध्येत् रावणरक्षसा।।१७।।
तदाऽयोध्यापि लंकेव शत्रुभिः पीडिता भवेत्।
सहस्रशो वीरगतिं प्राप्नुयूरामसेवकाः।।१८।।
साकेतकोशो रिक्तः स्यात् संदिग्धौ हि जयाजयौ।
ज्ञात्वाऽखिलं तदू भवता तादृशी योजना कृता।।१९।।
अप्राप्तराज्यः श्रीरामो युद्येत् रावणशत्रुणा।
न हानिः स्यादयोध्यायाः विजय एव केवलम्।।२०।।

अन्त में श्री परशुरामजी अपना धनुष राम को सौंप कर स्वयं वन को चले गये। आपके द्वारा यथाक्रम सम्यक् प्रयुक्त इस अभिनय से गृहयुद्ध में प्रवृत्त सभी राजा लोग बिना ही युद्ध के पराजित हो गए। फिर दशरथ जी ने जब अनुपयुक्त समय में ही रामराज्याभिषेक करने का निश्चय किया तो उसको रोकने के लिए आपने ही मन्थरा दासी को शिक्षित किया। यदि राम राजा होकर रावण शत्रु से युद्ध करते तो लंका की भांति अयोध्या भी आपद्ग्रस्त होती। राम के भी सहस्त्रों सैनिक वीर गति को प्राप्त होते। अयोध्या का कोष रिक्त हो जाता, फिर भी जय पराजय सन्दिग्ध ही रहती। सो, यह सब-कुछ आपने समझ बूझ कर ऐसी योजना बनाई कि बिना राजा बने ही राम का अपने शत्रु रावण से युद्ध हो, अयोध्या की कुछ भी हानि न हो किन्तु विजयश्री ही प्राप्त हो।

नाटकस्यास्य सर्वस्य सूत्रधारस्त्वमेव हि।

अतः पृच्छामि भगवन् प्रणम्य तव पादयोः।।२१।।

इस समस्त नाटक के आप ही सूत्रधार थे। इसलिए भगवान् मैं प्रमाण करके आप से पूछता हूं।

कियत् रामायणं काव्यं सम्पूर्णं सर्वतोमुखम्।
यत्पाठादखिलं रामचरितं विदितं भवेत्।
अथ तत्रापि वैविध्यं किमर्थं मुनिसत्तम।।२२।।

सम्पूर्ण रामायण काव्य कितने प्रमाण वाला है ? जिसके पढ़ने से सम्पूर्ण रामचरित का परिज्ञान हो जाए। अथवा रामचरित का अनेक ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार से वर्णन किया मिलता है, यह वैविध्य क्यों है ?

कौशिक उवाच

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद् रामायणात्मना।।२३।।
अनन्ता वै यथा वेदास्तथा रामकथा मता।
ऋग्वेदस्य च या मुख्या लोके शाकलसंहिता।।२४।।
तस्यां हि विद्यते सूक्तं दृष्टं वम्रिमहर्षिणा।
तदेव बीजं प्रथमं श्रीरामचरितस्य हि।।२५।।

श्री कौशिक जी बोले – वेदों द्वारा जिसको जाना जा सकता है, ऐसे परम पुरुष भगवान् जब दशरथ के यहां पुत्र रूप में अवतरित हुवे, तब साक्षात् वेद ही प्रचेता ऋषि के पुत्र महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण के रूप में प्रादुर्भूत हुवे।

सो जैसे वेद अनन्त है, इसी प्रकार राम कथा भी अनन्त है। ऋग्वेद की जो मुख्य शाकल नाम की शाखा लोक में प्रसिद्ध है, उस संहिता में ही 'वम्री' नाम ऋषि द्वारा समाधि में दृष्ट एक सूक्त है। श्री रामचरित का वह सूक्त ही प्रथम बीज है।

वेदे यो वम्रिरित्युक्तो लोके वाल्मीकिरेव सः।

द्वावप्येतौ समानार्थौ शब्दौ नात्र हि संशयः।।२६।।

वेद में रामचरित सूक्त के मन्त्रद्रष्टा ऋषि का नाम 'वम्री' कहा गया है, लोक में उसे ही 'वाल्मीकि' कहा गया है। उक्त वम्री और वाल्मीकि दोनों ही शब्द समान अर्थ वाले प्रसिद्ध हैं।

दृष्ट्वा क्रौञ्चवधं क्षुब्धो निषादं मुनिपुंगवः।
शशाप शोकसन्तप्तो भगवत्प्रेरिताशयः।।२७।।
मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।२८।।

मुनिश्रेष्ठ वाल्मीकि जब एक निषाद द्वारा क्रौञ्च मिथुन में से एक पक्षी के वध से क्षुब्ध और शोक सन्तप्त हुवे तो भगवत् प्रेरणा से उनके मुख से यह शाप निकला कि – 'हे निषाद! तू सदा-सदा को प्रतिष्ठा को प्राप्त मत हो, क्योंकि तूने क्रौञ्च युगल में से काममोहित एक पक्षी का वध कर डाला है।

इत्थं श्लोकत्वमापन्नो यस्य शोको महात्मनः।
स नारदोपदेशेन तद्बीजं वेद मध्यगम्।।२९।।
गृहीत्वा निर्ममे काव्यमादिमं मुनिसत्तमः।
चतुर्विंशतिसाहस्रं नानाख्यानोपशाभितम्।।३०।।
तद् विद्धि छन्दसां मातुर्व्याख्यारूपं हि केवलम्।
एकैकाक्षरमादाय सहस्रश्लोकमण्डितम्।।३१।।

इस प्रकार जिस महात्मा वाल्मीकि का 'शोक' भी 'श्लोक' रूप को प्राप्त हो गया, तब देवर्षि नारद के उपदेश से वही वेदोक्त रामचरित का बीज लेकर उसी के उपोद्बलन द्वारा आदिकाव्य (वाल्मीकीय रामायण) का निर्माण किया गया। यह ग्रंथ चौबीस सहस्त्र श्लोकात्मक है और सम्बन्धित अनेक आख्यानों से संयुक्त है।

सो, यह आदि काव्य वेदमाता गायत्री के चौबीस अक्षरों में से प्रत्येक अक्षर पर एक-एक सहस्त्र श्लोकात्मक व्याख्या रूप ही है।

शङ्करः प्रथमं चक्रे शतकोटि प्रविस्तरम्।
अस्माकमिदमस्माकं जातः कोलाहलस्तदा।।३२।।
देवासुरमनुष्येषु श्रीरामचरितात्मकः।
त्रिधा विभज्य तच्छम्भुस्त्रिभ्य एव प्रदत्तवान्।।३३।।

शंकर भगवान् ने उसी का उपोद्बलन करके सौ करोड़ श्लोक विस्तार वाला सर्वप्रथम रामायण रचा। उस समय तीनों लोक में रामचरित विषयक कोलाहल मच गया। 'यह हमारा है यह हमारा है' इस प्रकार देव असुर और मनुष्य सभी यह कहने लगे। तब शंकर ने उनके तीन भाग करके तीनों को बांट दिये।

एको भागो गतः स्वर्गे पातालेऽथ द्वितीयकः।
तृतीयो मानुषे लोके विस्तीर्णो यत्र तत्र वै।।३४।।
त्रयस्त्रिंशन्मिताः कोट्यस्त्रयस्त्रिंशच्च लक्षकाः।
त्रयस्त्रिंशच्च साहस्रं त्रयस्त्रिंशत् शतत्रयम्।।
दशाक्षरेण संयुक्त एकोभागः प्रचक्षते।
त्रिधा विभाजिते तस्मिन् यत् शिष्टमक्षरद्वयम्।।३५।।
तद् रामाख्यं परं ब्रह्म गृहीतं शम्भुना स्वयम्।।३६।।

उसी शाम्भवी रामायण का एक भाग स्वर्ग में पहुंचा एक भाग पाताल में गया और तीसरा भाग मनुष्य लोक में जहां तहां विस्तार को प्राप्त हुआ। सो, तेंतीस करोड़, तेंतीस लाख, तेंतीस हजार तीन सौ तेंतीस श्लोक और दश अक्षरात्मक एक-एक भाग बन जाने पर जो दो अक्षर अवशिष्ट बचे वे दोनों अक्षर 'रा' और 'म' साक्षात् परब्रह्म राम ही हैं, वे शंकर भगवान् ने ग्रहण किये।

तदेव रामचरितं व्यासादिमुनिपुंगवैः।
विभिन्नदृष्ट्या व्याख्यातं स्व स्वग्रन्थेषु सुव्रत।।३७।।

हे सुव्रत ! वह रामचरित फिर वेदव्यास आदि महामुनियों द्वारा अपने रचित पुराणादि ग्रन्थों में भिन्न २ दृष्टियों से उपनिबद्ध किया गया है।

ऐतिहासिकदृष्ट्या तद् विद्धि वाल्मीकिवर्णितम्।
अध्यात्मदृष्ट्या चाध्यात्ममानन्दाख्ये रसात्मकम्।।३८।।

सो, उन में श्री वाल्मीकि द्वारा वर्णित रामचरित इतिहास प्रधान शैली में उपनिबद्ध है। अध्यात्म रामायण में यह आध्यात्मिक शैली से वर्णित है, और ''आनन्द रामायण'' में रसात्मक शैली से वर्णित है।

पुराणोपपुराणेषु भक्तिभावेन वर्णितम्।
अद्भुते चाद्भुतं तद्धि दिव्यं हनुमदीरितम्।।३९।।

पुराणों और उपपुराणों में वह भक्ति प्रधान शैली से वर्णित है। अद्भुत रामायण में बड़ी अद्भुत रीति से वर्णित है, श्री हनुमान् जी के अपने 'हनुमान् नाटक' में वह दिव्य रूप में वर्णित है।

अनन्तं रामचरितमेकस्मिन् पुस्तके कथम्।
तद्धि वर्णयितुं शक्यमतो ग्रन्थाः सहस्रशः।।४०।।

जब कि राम चरित अनन्त है तब वह एक ग्रंथ में कैसे सब समा सकता है, इसलिए रामायण के सहस्त्रों ग्रंथ हैं।

अकूपारो यथा सिन्धुश्चुलकीकर्तुमक्षमः।
तथैव रामचरितं नैकस्मिन् माति पुस्तके।।४१।।

जैसे अपार समुद्र चुल्लू में भर सकना असम्भव है उसी प्रकार रामचरित भी एक ग्रन्थ मे समा सकना असम्भव है।

अतो हि बहवो ग्रन्था नानारामकथात्मकाः।
नानात्वं दूषणं नास्ति भूषणं तद्धि सुव्रत।।४२।।

इसलिए भगवान् राम की नाना भांति की कथाओं वाले अनेक ग्रन्थ हैं। यह अनेकता दूषण नहीं किन्तु भूषण ही है।

परस्परविरोधोऽपि यो ग्रन्थेषु विलोक्यते।
सोऽपि साधु समाधेयः कल्पभेदोपलक्षितः।।४३।।

ग्रंथों में जो परस्पर विरोध दृष्ट है वह भी कल्पभेद से भली प्रकार समाधान करने योग्य है।

कल्पे-कल्पे भगवतो ह्यवतारा भवन्ति हि।
लीलावैविध्यमप्यस्मिन् नासम्भाव्यं हि पुत्रक।।४४।।

क्योंकि प्रत्येक कल्प में भगवान् के अवतार होते हैं सो, हे पुत्र! विभिन्न कल्पों में लीलाओं का वैभिन्न्य भी असम्भव नहीं है।

देवरात उवाच

अनादिनिधना वेदा इति शास्त्रविनिर्णयः।
तत्रास्ति रामचरितं श्रीमद्भिरित्युदीरितम्।।४५।।
रामावतारो भवति ब्रह्मन् त्रेतायुगे सदा।
त्रेताकालीनघटना वेदेषु घटते कथम्।।४६।।
तथा सति तु वेदानामनादित्वं विनश्यति।
इति मे संशयस्तात! समाधेयस्त्वयाधुना।।४७।।

देवरात बोले – समस्त शास्त्रों का यह निर्णीत सिद्धांत है कि वेद अनादि अनन्त है, परन्तु आपने कहा है कि वेद में राम का चरित्र वर्णित है। हे ब्रह्मन्! रामावतार तो त्रेतायुग में घटित होता है सो, त्रेताकालीन घटना का वर्णन अनादि वेद में कैसे सम्भव है? ऐसा मानने पर वेदों का अनादित्व नहीं रहता, मुझे यह बहुत बड़ा संशय है। हे तात! अब इसका समाधान कीजिए।

कौशिक उवाच

अनादिनिधना वेदा इतिहासविवर्जिताः।
मीमांसकानां राद्धान्तः सर्वतन्त्रो न संशयः।।४८।।
परं भगवतो विष्णोर्नित्यलीलाश्रिताः कथाः।
त्रिकालाऽबाधिता या यास्तास्ता वेदेषु वर्णिताः।।४९।।

श्री कौशिक जी ने कहा – इस में संदेह नहीं कि मीमांसकों का

यह सर्वतन्त्र सिद्धांत है कि वेद अनादिनिधन और इतिहास से रहित हैं, परन्तु भगवान् विष्णु की जो त्रिकालाबाधित नित्य लीलाश्रित कथाएं हैं, वे सब वेद में वर्णित हैं।

भूतं भव्यं भविष्यं यत् सर्वं वेदात् प्रसिद्ध्यति।
एषो मनूक्तस्सिद्धान्तोऽपवादः सर्वसम्मतः।।५०।।
त्रिकालज्ञप्रभोर्ज्ञानं नहि तत् कालबाधितम्।
भविष्यमपि तद्ज्ञाने वर्तमानवदास्थितम्।।५१।।

'भूत भविष्यत् और वर्तमान सब कुछ वेद से सिद्ध होता है' यह मनु प्रोक्त सिद्धांत सर्वसम्मत और अनैतिहासिकता का अपवाद भूत है। त्रिकालज्ञ भगवान् का ज्ञान काल द्वारा बाधित नहीं होता, भविष्यत् कालीन ज्ञान भी भगवान् के ज्ञान में वर्तमान की भांति ही सदैव प्रस्फुटित रहता है।

वेदोक्तान्येव नामानि दर्शं दर्शं मुनीश्वराः।
पश्चात् लोकेषु तान्येव ख्यापयन्ति यथायथम्।।५२।।

वेदोक्त नामों को देख-देख कर ही मुनीश्वरों ने पश्चात् लोक में तादृश नाम रक्खे हैं।

वेदेऽवलोक्य गङ्गाया वर्णितं नाम सुव्रत।
दृष्ट्वा समाधौ लोके तद् भागीरथ्याविनिश्चितम्।।५३।।
भागीरथनृपात्पश्चान् निर्मिता वेदसंहिता।
इत्याशंका मृषा यस्माद् वेदात्सर्वं हि निर्बभौ।।५५।।

हे सुव्रत! वेद में गंगा का नाम वर्णित देख कर मुनिजनों ने समाधि द्वारा यह निश्चय किया कि राजा भगीरथ द्वारा आनीत जलधारा का ही यह नाम होना चाहिये, अतः तथैव प्रख्यापित किया। सो, राजा भगीरथ के बाद वेद बने, यहां ऐसी कल्पना व्यर्थ है क्योंकि वेद से ही सब कुछ भासित हुआ है।

तस्माद् वेदेषु दृश्यन्तेऽवताराणां शुभाः कथाः।

नैवात्र विस्मयः काय्र्यो वेदो नारायणः स्वयम्।।५५।।

इसलिए वेदों में भगवान् के अवतारों की शुभ कथाएं बीज रूप में उपलब्ध होती हैं, इस में तुम्हें कुछ सन्देह नहीं करना चाहिए क्योंकि वेद तो स्वयं नारायण ही हैं।

यस्य निःश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्।
निर्ममे स हि सर्वात्मा रामरूपी जनार्दनः।।५६।।

समस्त वेद जिस प्रभु के निःश्वासभूत हैं जो वेदों के द्वारा ही समस्त जगत् की रचना करता है। वही जनार्दन भगवान् राम रूप में अवतरित हुए।

वेदेषु दृश्यते यो हि शब्दब्रह्मस्वरूपधृक्।
स एव रामरूपेण लोकेऽवतरति प्रभुः।।५७।।

वेद में शब्द स्वरूपधारी जो ब्रह्म दीख पड़ता है, वही प्रभु तो लोक में राम रूप में अवतरित होता है।

स्वस्वाज्ञां स्वयमेवेशश्चरित्वा दर्शयत्यसौ।
अतः श्रीरामचरितं वेदसिद्धान्तदर्शनम्।।५८।।

वह प्रभु अवतरित हो कर वेद में आदिष्ट अपनी आज्ञाओं को आचरण में परिणत करके दिखाते हैं। इसलिए रामचरित वैदिक सिद्धांतों का क्रियात्मक निदर्शन है।

ज्ञानं हि द्विविधं प्रोक्तं सिद्धान्ताचारभेदतः।
सैद्धान्तिकं वेददृष्टं चरितं व्यावहारिकम्।।५९।।
ऋगादिकं तयोराद्यं परं रामायणं स्मृतम्।
अतः श्रीरामचरितं श्रुतीनामुपबृंहणम्।।६०।।

सिद्धांत और आचार के भेद से ज्ञान दो प्रकार का होता है, सो, वेद में वह ज्ञान सिद्धांत रूप में स्थित है और रामचरित में व्यवहार में आने वाले रूप में विद्यमान है। ऋग् आदि चारों वेदों में सैद्धांतिक ज्ञान

है और रामायण में आचरित ज्ञान है इसलिए रामचरित वेदों का ही उपबृंहण (व्याख्यान) है।

* रामानुकरणायासो वेदाज्ञापालनव्रतम्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन रामो ध्येयः सदास्तिकैः।।६१।।

राम भगवान् के आचरण का अनुकरण करना वस्तुतः वेद की आज्ञा पालन करने का व्रत है। इसलिए आस्तिकों को सब प्रकार के प्रयत्न से राम भगवान् का ध्यान करना चाहिए।

अन्येषामवताराणां मुन्यर्षिगुरुतद्विदाम्।
उपदेशोऽनुसर्तव्यः सर्वदा सर्वथा बुधैः।।६२।।

राम से भिन्न अन्यान्य सभी देवताओं का और ऋषि मुनि गुरू आदि पूज्यजनों का उपदेश ही आस्तिकों द्वारा सदैव सर्वथा अनुसरणीय है।

परं तेषां य आचारो यावान् वेदानुमोदितः।
तावानेवाऽनुसर्तव्यो न वाऽन्धश्रद्धयाऽपरः।।६३।।

परन्तु उनका आचरण जितना वेद द्वारा अनुमोदित हो उतना ही अनुसरणीय है, अन्धश्रद्धा से अधिक अनुसरणीय नहीं है।

लीलावताराः सन्त्यन्येऽल्पज्ञाश्चैव नरादयः।
एको हि भगवान् रामो मर्य्यादापुरुषोत्तमः।।६४।।

क्योंकि राम भगवान् के अतिरिक्त अन्यान्य अवतार प्रायः लीलावतार होते हैं, अथ च ऋषि मुनि गुरूजन भी अल्पज्ञ ही होते हैं। एकमात्र भगवान् राम ही 'मर्य्यादा पुरूषोत्तम' हैं।

तस्योपदेशश्चाचारो ग्राह्यौ यत्नेन द्वावपि।
सर्वेषामेव शास्त्राणां मथिताऽर्थोऽयमद्भुतः।।६५।।

राम भगवान् का उपदेश और आचरण दोनों ही अनुसरणीय है। समस्त शास्त्रों का यही अद्भुत मथित अर्थ है।

वेदे शिष्याः प्रबोध्यन्ते गुरुणा स्वयमेव हि।
यानि सुचरितान्येव ह्यस्मांक शृणु पुत्रकाः।।६६।।
तान्येव समुपास्यानि नेतराणि कदाचन।

वेद में गुरू शिष्य को प्रथम स्वयं यही उपदेश देते हैं कि हे पुत्र! सुन, हमारे जो वेदानुमोदित आचरण हों उनका ही तुम अनुकरण करना अन्यों का नहीं।

यतो नरो बहुज्ञोऽपि न सर्वज्ञ इति स्थितिः।।६७।।
अल्पज्ञत्वात्प्रमादाद्वा कदाचाररतो भवेत्।
तेजीयांसः समर्था ये तेषां दिव्यं हि जीवनम्।।६८।।
नानुकर्तुं हि तच्छक्यं मनुजैरल्पशक्तिभिः।
विषदिग्धं पूतनायाः पपौ स्तन्यं जनार्दनः।।६९।।
मुंजाटवीदवाग्निञ्च, शिवो हालाहलं विषम्।
अल्पशक्तिर्नरस्तस्मान्न देवचरितं चरेत्।।७०।।

क्योंकि मनुष्य बहुत कुछ का ज्ञाता होता हुआ भी सर्वज्ञ तो नहीं होता, यह बात स्पष्ट है। इसलिये अल्पज्ञ होने के कारण किंवा प्रमादवश मनुष्य कदाचार रत हो सकता है। जो तेजस्वी और समर्थ होते हैं उनका जीवन दिव्य कोटि का होता है, अल्पशक्ति साधारण मनुष्य उनके दिव्य आचरणों का अनुकरण नहीं कर सकता। श्री कृष्ण भगवान् ने पूतना बालघातिनी का विष से सराबोर स्तन पान किया और मुंजवन में लगी दावाग्नि का भी पान किया।

शंकर भगवान् ने हालाहल विष का पान किया। इसलिए अल्प शक्ति वाले मनुष्य को देवताओं के आचरण का अनुकरण नहीं करना चाहिए।